कहने को कुछ है रूबी मे के पास

लेखन व चित्रः डेविड स्मॉल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरी प्रिय मिस मकैगिकिडी को
उनकी अनन्त सहायता व मेहरबानी के लिए

टैक्सस का नाडा कस्बा छोटा-सा था। अगर तुम कस्बे के एक छोर पर खड़े हो फुसफुसा कर कुछ कहो तो बात दूसरे छोर पर सुन सको, इतना छोटा।

फिर भी इसमें कुछ चीज़ें थीं। मसलन एक किराने की दुकान, एक बन्द हो चुका ट्रेन डिपो, एक तीन टांगों वाला कुत्ता और सार्विक शान्ति व समझ का वैश्विक मुख्यालय।

वैश्विक मुख्यालय मिस रूबी मे फुट के घर में ही था।

रूबी के सपने खासे बड़े थे। वह न्यू यॉर्क शहर में संयुक्त राष्ट्र संघ में जा सार्विक शान्ति और समझ का संदेशा देना चाहती थी।
पर रूबी की एक बड़ी-भारी समस्या थी . . .

उसकी जुबान बंधी-अकड़ी हुई थी। कभी-कभी उसके शब्दों के अक्षर उलट-पलट हो जाते थे।

इससे वह अनचाहे ही लोगों का अपमान कर डालती थी।

और अकारण ही, मतलब बिना किसी जाहिर कारण, कोई उसका कहा समझ नहीं पाता था।

यही कारण था कि नाडा के लोग रूबी मे फुट को निहायत मूरख मान चुके थे।

बिली बॉब रूबी मे का भांजा था। वह ऐसी चीज़ों का आविष्कार करना चाहता था, जो मानवता को लाभ पहुँचाएं। पर खूब सोच-विचार करने पर भी उसे ऐसी कोई नई चीज़ नहीं सूझी।

तब एक दिन उसे एक ख़याल सूझा। वह रसोई में गया। अल्मारियों के दरवाज़े खड़खड़ाए, दराजें खुली और धड़ाम से बन्द हुईं, बर्तन आपस में टकराए। कुछ देर बाद बिली बॉब अपने नए आविष्कार के साथ बाहर निकला।

अखरोट तोड़ने का एक सरौता, बोतलों के ढक्कन खोलने का यंत्र, एक पेस्ट्री ब्रश और इस सब के बीच ऊपर की ओर उठते देवदार के शंकु!

"मौसी रूबी मे," बिली बॉब ने कहा, "आपकी परेशानियाँ खत्म हुईं! इसे पहनो और दुनिया को अपना संदेश देने का तैयार हो जाओ!"

"कुछ महसूस हो रहा है?" बिली बॉब ने पूछा। रूबी ने ना में सिर हिलाया। देवदार के सूखे शंकु खड़खड़ाए।

"अब बोलो!" उसके भांजे ने कुछ फेर-बदल करने के बाद कहा। "अब कुछ हुआ?"

"कुछ भी नहीं बॉबी बिल," रूबी मे ने जवाब दिया। "मेरा मतलब है बॉली बिब, मतलब बिलि ब्लॉब। मेरा मतलब.. "

अपने आविष्कार को मौसी के सिर से उतार बिली बॉब फिर रसोई घर में गायब हो गया। और कुछ ही पलों बाद एक नए और बेहतर उपकरण के साथ लौटा। उसने देवदार के शंकु हटा दिए थे, उसकी जगह खरबूजे के गोले निकालने का यंत्र, मोटे तार से बनी मथनी और बोतलों के कॉर्क निकालने का पेंच सीधा खड़ा कर दिया था।

और उपकरण कारगर हो गया!

चार बीस
और सात
वर्ष पहले..

अब रूबी मे सही-सही बोल सकती थी। उसे अब कोई रोक नहीं सका। पहले वह नाडा की मेयर बनी, तब टैक्सस की गवर्नर। वह उल्का की तेज़ी से सफलता की ओर बढ़ती गई।

पर अजीब यह था कि वह जनता के सामने एक बड़ा-सा टोप पहने बिना कभी नहीं आती थी।

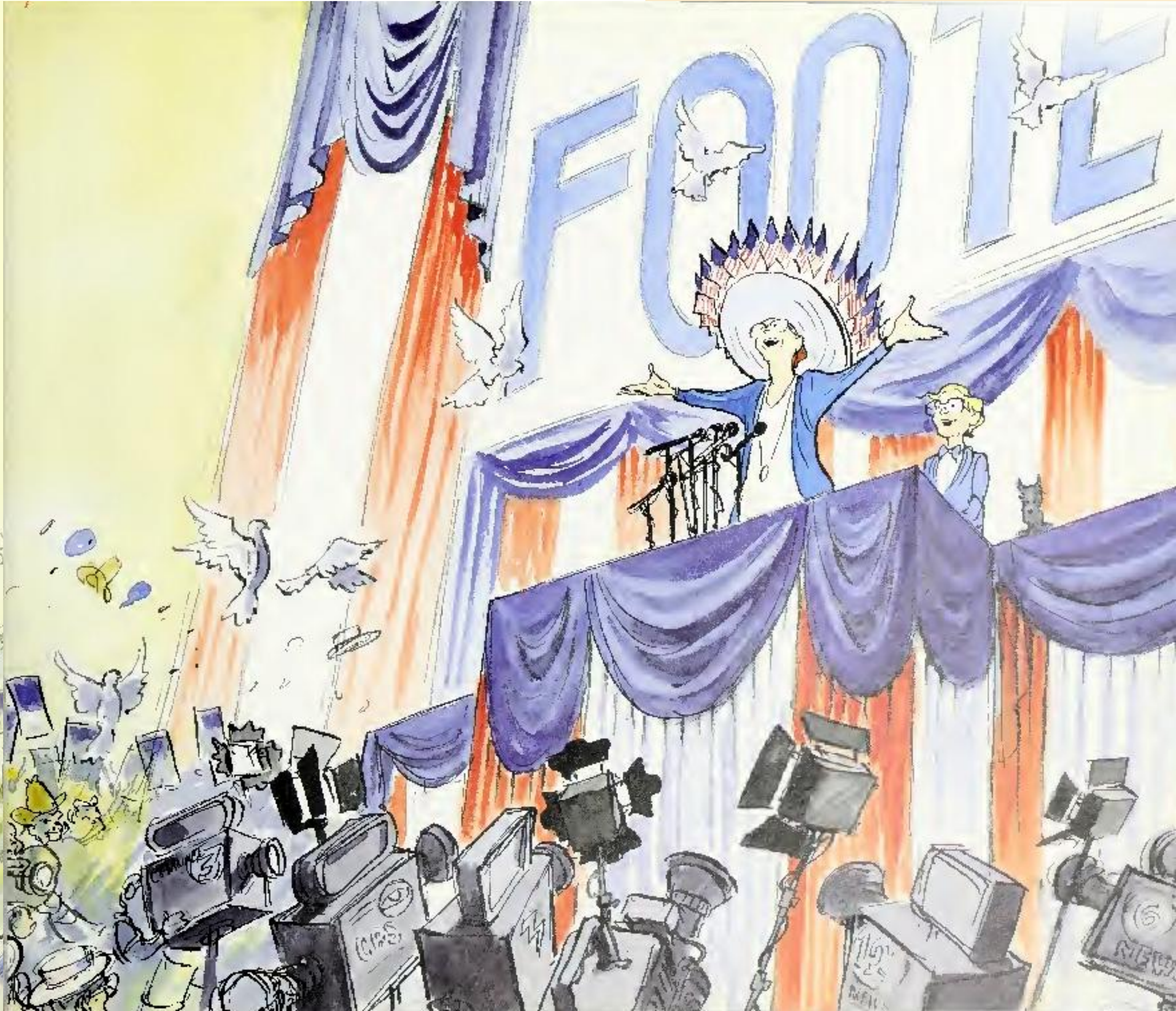

बिली बॉब के आविष्कार को एक नाम की ज़रूरत थी। सो उन्होंने उसे बॉबेट्रॉन का नाम दिया।

समय के साथ बिली बॉब ने उसकी मूल डिज़ाइन में और-और सुधार किए। और जैसे-जैसे बॉबेट्रॉन का आकार बढ़ा

उसके साथ-साथ रूबी मे के टोप भी बड़े होते गए।

आख़िरकार हुआ यह कि रूबी को संयुक्त राष्ट्र की महासभा में बोलने के लिए न्यू यॉर्क आमंत्रित किया गया। रूबी मे और बिली बॉब ने हवाई अड्डे से संयुक्त राष्ट्र प्लाज़ा के लिए टैक्सी ली। इस ख़ास मौके के लिए रूबी मे ने एक बड़ा सारा टोप पहना था, जिस पर ढ़ेरों शान्ति कपोत लगे थे।

तब विपदा आन पड़ी।

पंख फड़फड़ाता और पैनी आवाज़ में चीखता एक फुर्तीला बाज़, पास की गगनचुम्बी इमारत से सनसनाता आया। उसने अपने मज़बूत पंजों में टोप को झपटा और उसे ले उड़ा। वह शान्ति कपोतों को और बॉबेट्रॉन को साथ ले गया।

रूबी का चेहरा ज़र्द पड़ गया। वह सकते में आ गई।

बिली बॉब फुसफुसाया, ‘‘रूबी मे मौसी। मैं आपको अर्से से बताना चाह रहा था कि आपको अपने सिर पर उस पुराने कबाड़ से बने जुगाड़ की ज़रूरत ही नहीं है। यह सब दिमाग का खेल है। आप अपना संदेश बिना उसके भी बाकायदा दे सकती हैं।

एक कमज़ोर मुस्कान के साथ रूबी मे सभागार में गई।

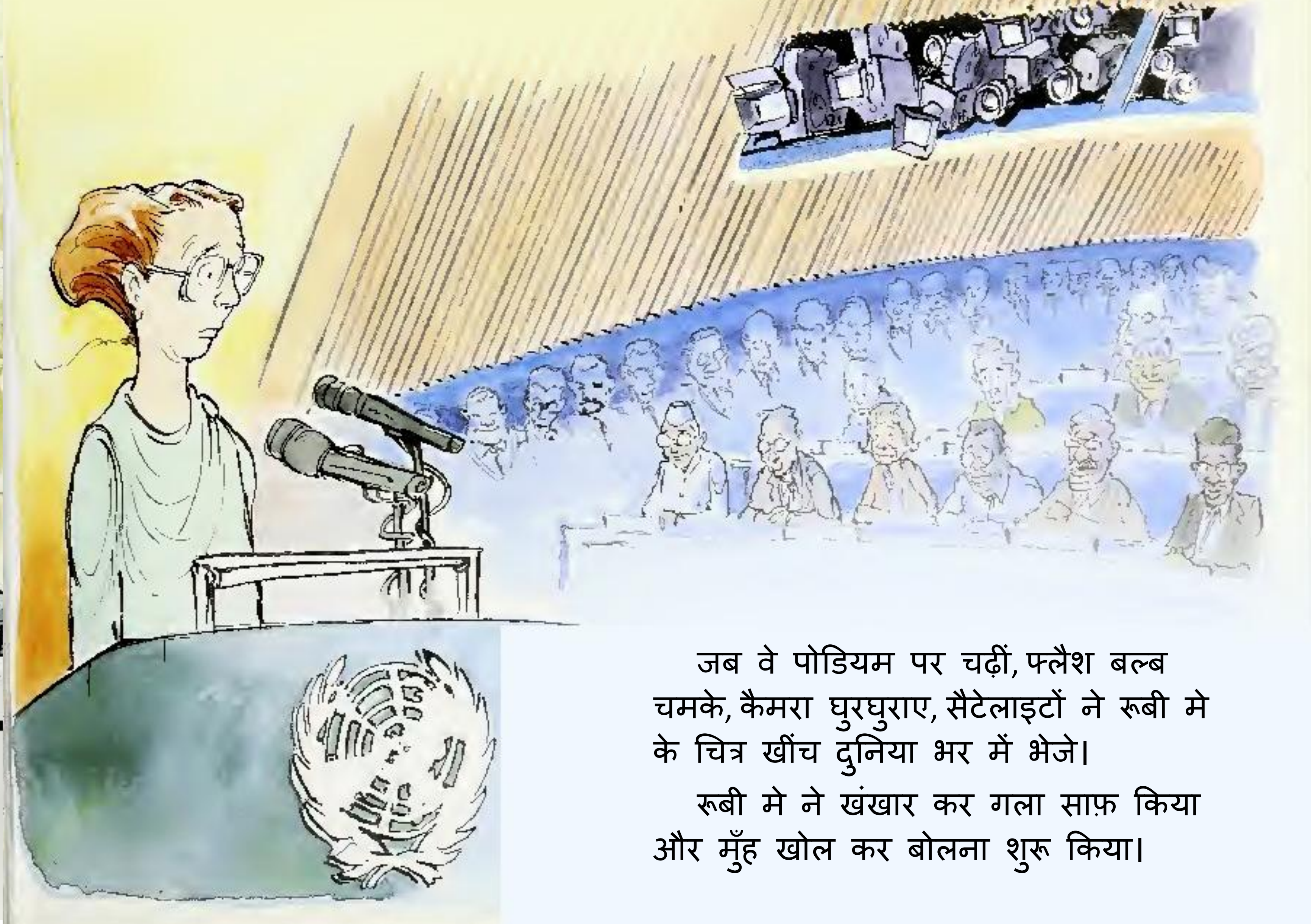

जब वे पोडियम पर चढ़ीं, फ्लैश बल्ब चमके, कैमरा घुरघुराए, सैटेलाइटों ने रूबी मे के चित्र खींच दुनिया भर में भेजे।

रूबी मे ने खंखार कर गला साफ़ किया और मुँह खोल कर बोलना शुरू किया।

उसके शब्द अर्थहीन बकवास थे।

अनुवादकों के कक्ष में दहशत फैल गई। तिरानवे भाषाओं के शब्दकोश खंगाले गए। पर अनुवादकों को भी शब्द का अर्थ समझ न आया। इधर सभागार में बैठे लोगों ने अपने ईयरफोन थपथपाए, अपने सिर हिलाए। इस बीच एक छोटा लड़का बाहर निकलने के दरवाज़े की ओर दौड़ा।

बिली बॉब सीढ़ियों की ओर भागा और तेज़ रफ्तार से तलघर को दौड़ा।

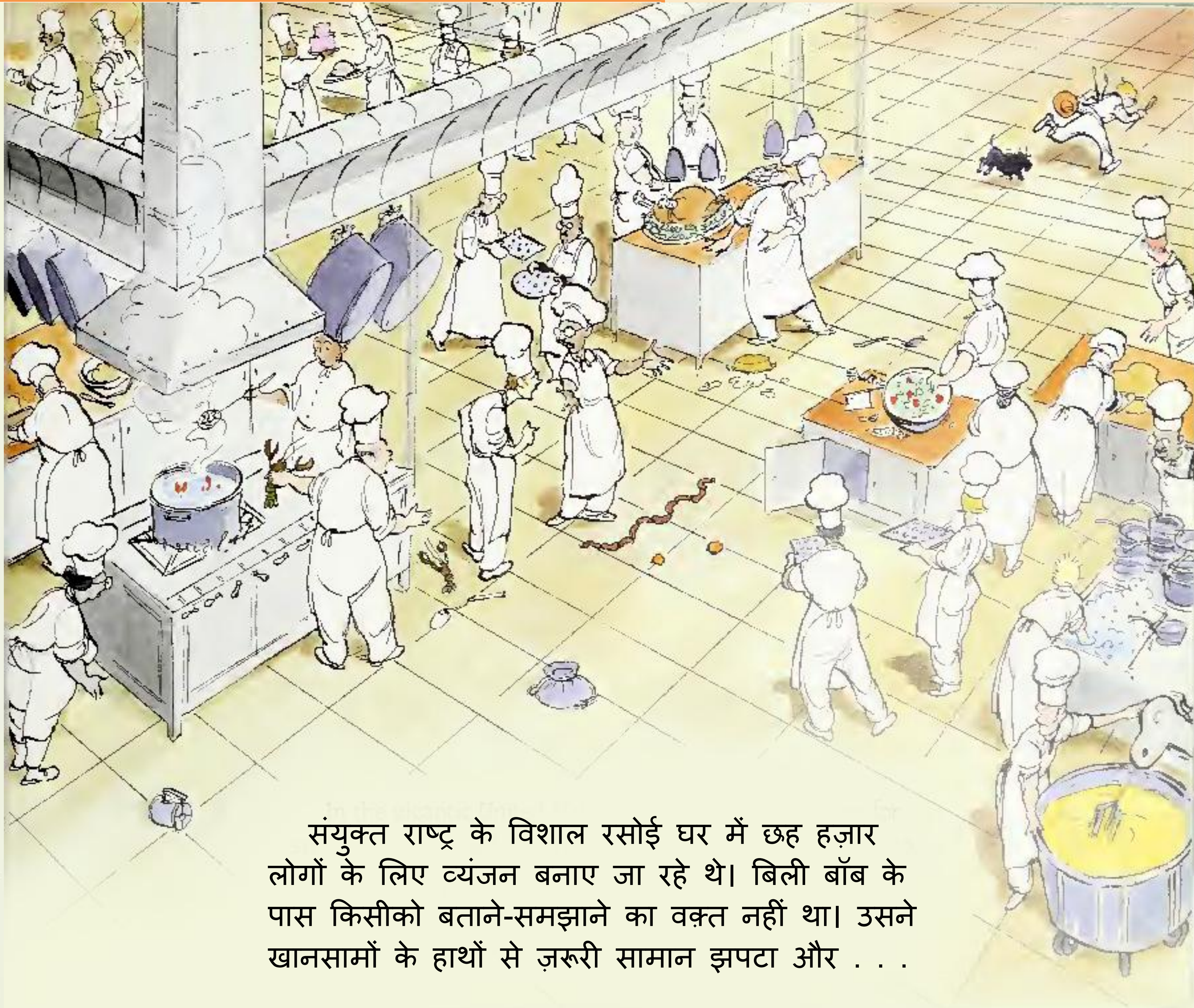

संयुक्त राष्ट्र के विशाल रसोई घर में छह हज़ार लोगों के लिए व्यंजन बनाए जा रहे थे। बिली बॉब के पास किसीको बताने-समझाने का वक़्त नहीं था। उसने खानसामों के हाथों से ज़रूरी सामान झपटा और . . .

तीसरी मंज़िल तक जाने के लिए लिफ्ट में चढ़ उन्हें जोड़ा-गांठा . . .

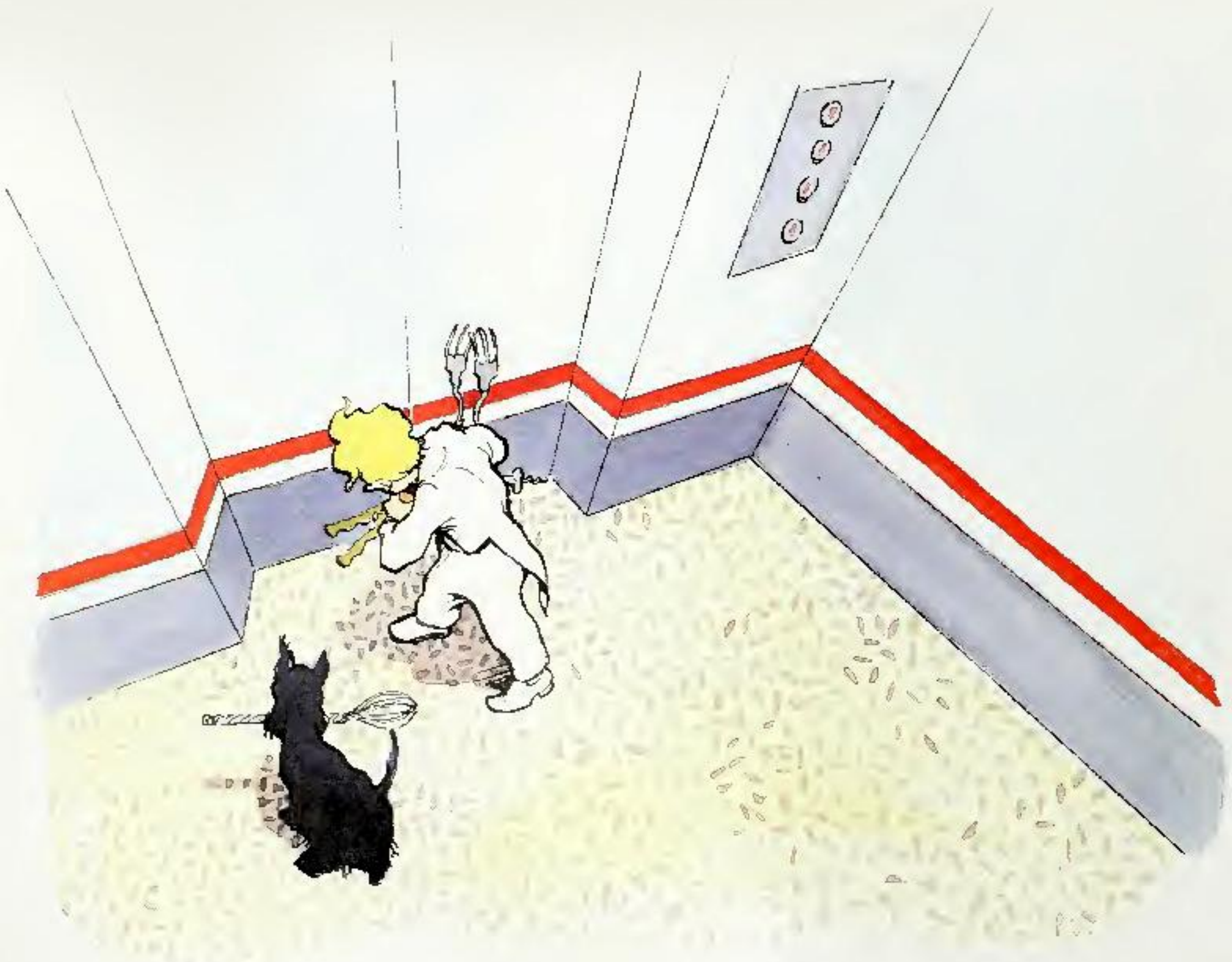

सभागार पहुँच वह पोडियम पर चढ़ा और
बॉबेट्रॉन को अपनी मौसी के सिर पर पहना दिया।

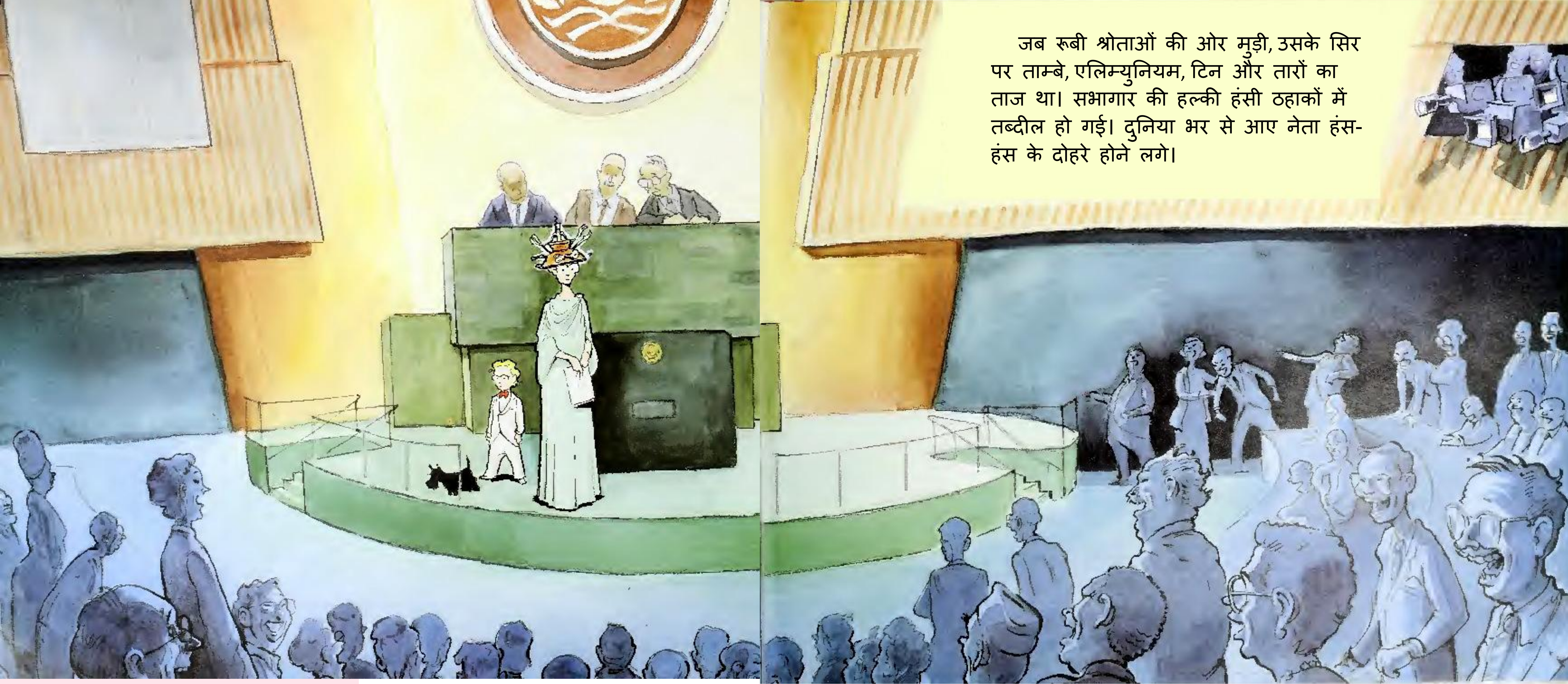

जब रूबी श्रोताओं की ओर मुड़ी, उसके सिर पर ताम्बे, एलिम्युनियम, टिन और तारों का ताज था। सभागार की हल्की हंसी ठहाकों में तब्दील हो गई। दुनिया भर से आए नेता हंस-हंस के दोहरे होने लगे।

तब रूबी मे फुट आगे बढ़ी। लोगें को चुप करवाने उसने अपना हाथ उठाया।

"मेरे मित्रों," उसने सधे स्वर में कहा। "दुनिया भर के नेताओं, आप सबके लिए मेरा संदेश सीधा-सरल हैः इस ग्रह में सार्विक शान्ति और समझ के लिए आपको साफ़-साफ़ बोलना होगा। फिर चाहे लोगों को आप बेवकूफ़ ही क्यों न लगें। तेज़-तर्रार दिखने और बकवास करने से यह हज़ार गुना बेहतर है।"

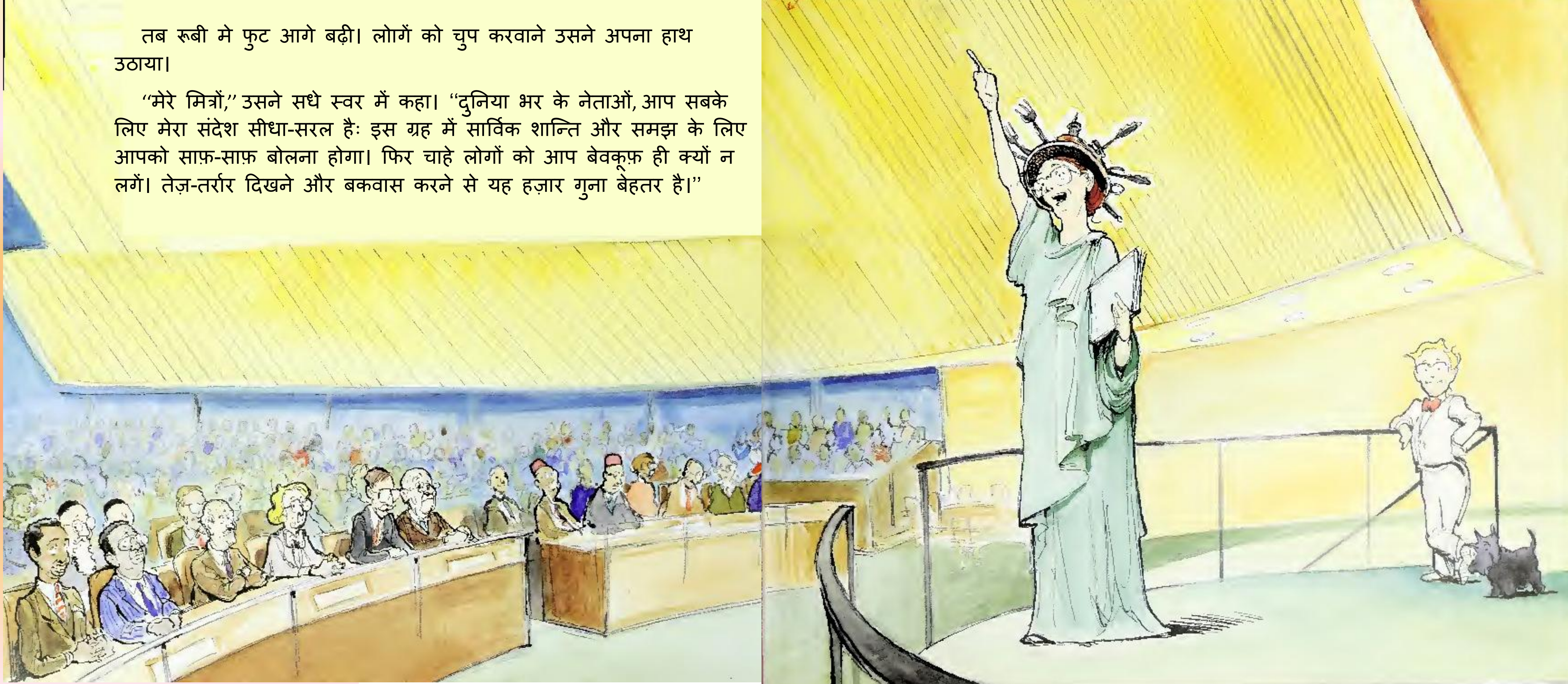

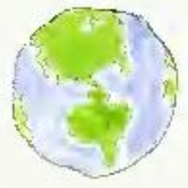

पृथ्वी का ग्रह छोटा था। तुम उसके एक ओर खड़े हो कुछ फुसफुसाओ तो दूसरी ओर सुनाई दे, इतना छोटा।

फिर भी पृथ्वी पर कुछ चीज़ें थीं। इसमें नाडा, टैक्सस, रूबी मे फुट और सार्विक शान्ति और समझ का वैश्विक मुख्यालय था।